प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंदजी सरस्वती दण्डीस्वामी जी

विषय तालिका

CD # 02 *MAY 2006 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	01.05.06	56	⊕	⊕		नर शरीर की महिमा, अहं ब्रह्मास्मि, दृष्टान्त-प्यासी तरंग	
2	01.05.06[P]	32				ब्रह्म विद्या प्राप्ति हेतु शिष्य की मर्यादा	
3	02.05.06	49	⊕	⊕	⊕	सच्चिदानंदघन-पुरुष, ईश्वर-मायापति, जागृत स्वप्न सुषुप्ति-माया/ ३ पत्नियाँ	
4	03.05.06	60	⊕			पाँच माताओं का वर्णन - १ जन्मदात्री माँ २ पृथ्वी ३ गाय ४ गंगा ५ श्रुति माता	
5	04.05.06	40	⊕			छान्दोग्य उपनिषद : सनतकुमारों का नारद को उपदेश	1
6	04.05.06[P]	34				माया का सर्प रूप, माया और ब्रह्म का स्पर्श नहीं होता, दिन-रात का दृष्टान्त	
7	05.05.06	46	⊕			भूमा : आत्म तत्त्व : ब्रह्म, माया-अल्प, नेत्र - पुतली दृष्टान्त, विश्वमोहिनी की कथा	2
8	05.05.06[P]	35				नारद मोह प्रसंग, जगत में सीताराम का दर्शन	
9	06.05.06	59	⊕			छान्दोग्य उपनिषद : सनतकुमार का नारद को उपदेश, इदं रूप निरूपण, सामान्य एवं विशेष ज्ञान	3
10	06.05.06[P]	35	⊕	⊕		अ०रा०-प्रथमसर्ग-राम हृदय : राम-हनुमान संवाद, भगवान द्वारा अपना निर्गुण निराकार स्वरूप निरूपण	
11	07.05.06[P]	30	⊕	⊕		अ०रा०-भ०राम का निर्गुण निराकार स्वरूप निरूपण, सर्वत्र राम ही व्याप्त है, अस्ति भाँति प्रियं नाम रूप-५ अंश	
12	08.05.06	41	⊕			छान्दोग्य उपनिषद : आरुणी का श्वेतकेतु को तत्त्वमसि का उपदेश, दृष्टान्त-बन्ध्यापुत्र	4
13	08.05.06[P]	28		⊕		अ०रा०-प्रथमसर्ग-राम हृदय : सीताजी द्वारा भ०राम का निर्गुण निराकार स्वरूप निरूपण एवं माया	
14	09.05.06	50	⊕			छा०उ० : उद्दालक ऋषि-आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश, ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या-जगत नामरूप है	5
15	09.05.06[P]	29				राम ही सबकी आत्मा है । क्रमानुसार भीतर से बाहर प्रियता की प्राथमिकता	
16	10.05.06	50	⊕			छा०उ० : उद्दालिक ऋषि-आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश, **ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या**-जगत नामरूप है	6
17	10.05.06[P]	34	⊕	⊕		अ०रा०-सीता हनुमान संवाद : भ०राम का निर्गुणनिराकार स्वरूप निरूपण, अहं पश्यामि-द्रष्टा एवं जगत-दृश्य है	
18	11.05.06	59	⊕	अति विशेष		छा०उ० : आत्म अनात्म विवेक-**तत्त्वमसि**, आत्मा ही ब्रह्म है, मैं ज्ञानरूप हूँ-वही ब्रह्म है	7
19	12.05.06	32	⊕	⊕		अ०रा० : भ०राम का नि०नि० स्वरूप निरूपण, ज्ञान सर्वप्रथम कैकेयी को फिर लक्ष्मण, कौशल्या तथा दशरथ को	
20	13.05.06	64	⊕	अति विशेष		ज्ञान और अज्ञान दोनों अनादि हैं, **अनादि के छः प्रकार**, कूटस्थ ज्ञान अनंत है अज्ञान अन्तवान है, जीव की ७ अवस्थायें	***
21	13.05.06[P]	33				वेदमार्ग से अज्ञान आवरण का नाश एवं आत्मा के नि०नि० स्वरूप ज्ञान द्वारा **सद्य मुक्ति**	
22	14.05.06[P]	31	⊕			**आत्मा परमात्मा** और **अनात्मा** का स्वरूप निरूपण	
23	15.05.06[P]	35	⊕	विशेष		कर्म स्वभाव वश केवल प्रकृति में हैं, ब्रह्म अकर्म अभोक्ता प्रकाशक मात्र है	***
24	16.05.06	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचनअनुपलब्ध	NA
25	17.05.06	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचनअनुपलब्ध	NA
26	18.05.06	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचनअनुपलब्ध	NA
27	19.05.06	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचनअनुपलब्ध	NA
28	20.05.06	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचनअनुपलब्ध	NA
29	21.05.06	53	⊕	अति विशेष		**५ भ्रान्तियाँ** १जीव-ईश्वर भेद २कर्तृत्व-भोक्तृत्व ३संगभ्रान्ति ४जगत ब्रह्म का विकार है ५जगत सत् है और भ० से भिन्न है	Imp
30	22.05.06	60	⊕	⊕		पंचकोष निरूपण-अन्नमय कोष विस्तारसे, सेठ की कथा - गढ़ा हुआ धन ⊕ **गर्भोपनिषद** - पैंग्लोपनिषदानुसार	
31	23.05.06	59	⊕	⊕		पैंग्लोपनिषदानुसार **गर्भोपनिषद** - शरीर रचना विज्ञान ⊕ आत्मा पंचकोष एवं इनों देह से सर्वथा पृथक व असंग है	
32	24.05.06	51	⊕	अति विशेष		गीता : १५/१६-१८ :: क्षर अक्षर और पुरुषोत्तम का स्वरूप निरूपण ⊕ माया रूपी मेघ का दृष्टान्त	Imp
33	25.05.06	00	⊕	⊕		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
34	26.05.06	44	⊕			**ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या**-तुम द्रष्टा ब्रह्म हो तथा दृश्य जगत माया है ⊕ भ०राम शिव एवं कृष्ण के वचन प्रमाण	
35	27.05.06	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचनअनुपलब्ध	NA
36	28.05.06	56	⊕	⊕	⊕	**भ०जगत के अभिन्ननिमित्तोपादान कारण हैं**, जगत रज्जु में सर्पवत् माया मात्र है, अद्वैत ब्रह्म के सिवा कुछ नहीं, **अहंब्रह्मास्मि**	विशेष
37	28.05.06[P]	29	⊕	⊕		**ओंकार** ब्रह्म का नाम : **स्वरूप निरूपण** ⊕ वाणी की उत्पत्ति :- १ परा २ पश्यन्ति ३ मध्यमा ४ बैखरी	